अर्जुन को भगवान् ने इस प्रकार सम्बोधित किया है, क्योंकि वह शत्रु-संहार के लिए बाण चलाने में दक्ष है। **निमित्तमात्रम्** शब्द भी सारगर्भित है। सम्पूर्ण विश्व श्रीभगवान् के संकल्प के अनुसार क्रियाशील है। किन्तु मूढ़ मनुष्य अपनी अल्पज्ञतावश समझते हैं कि प्रकृति का कोई निश्चित क्रम नहीं है, सारी सृष्टि आकस्मिक है। वैज्ञानिक कहे जाने वाले मूर्ख नाना प्रकार की अटकलें लगाते रहते हैं; पर वास्तव में तो सृष्टि के सम्बन्ध में संकल्प-विकल्प (मनोधर्म) का कोई प्रश्न ही नहीं बनता। इस संसार में एक निश्चित योजना को कार्यरूप दिया जा रहा है। वह योजना क्या है? यह सृष्टि एक ऐसा सुयोग है, जिससे बद्धजीव अपने घर, श्रीभगवान् को फिर प्राप्त कर सकते हैं। जब तक उनमें प्रभुत्व का अहंकार है, तब तक वे माया पर अधिकार करने का प्रयत्न करते हुए संसार में बँधे रहते हैं। इसके विपरीत जो परमेश्वर कृष्ण की योजना को समझ कर कृष्णभावना का अभ्यास करता है, वह परम बुद्धिमान् है। सृष्टि का सृजन तथा विनाश श्रीभगवान् के श्रेष्ठ मार्गदर्शन में संचालित है। कुरुक्षेत्र के युद्ध का आयोजन भी श्रीकृष्ण की योजना के अनुसार ही हुआ। अर्जुन युद्ध से निवृत्त हो रहा था, पर श्रीभगवान् ने उसे आदेश दिया कि वह युद्ध अवश्य करे और साथ में उनका स्मरण भी करता रहे। तभी वह सुखी हो सकेगा। जो मनुष्य पूर्णतया कृष्णभावनाभावित है, जिसका जीवन भगवद्भक्तिपरायण है, वह कृतार्थ हो चुका है।

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।।३४।।

द्रोणम् च=द्रोण भी; **भीष्मम् च**=भीष्म भी; **जयद्रथम् च**=जयद्रथ भी; **कर्णम्**=कर्ण; **तथा**=भी; **अन्यान्**=अन्य; **अपि**=भी; **योधवीरान्**=योद्धाओं को; **मया**=मेरे द्वारा; **हतान्**=मारे हुए; **त्वम्**=तू; **जहि**=मार; **मा व्यथिष्ठाः**=भय मत कर; **युध्यस्व**=युद्ध कर; **जेतासि**=जीतेगा; **रणे**=युद्ध में; **सपत्नान्**=वैरियों को।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! द्रोण, भीष्म, जयद्रथ, कर्ण आदि सब महारथी मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं। इसलिए निर्भय होकर युद्ध कर; निःसन्देह तू युद्ध में वैरियों को जीतेगा।।३४।।

तात्पर्य

वैसे तो प्रत्येक घटना श्रीभगवान् के संकल्प के अनुसार घटित होती है, परन्तु भक्तों के प्रति वे विशेष कृपामय हैं और चाहते हैं कि भक्त उनकी इच्छानुसार उनके संकल्प की पूर्ति करके यशलाभ करें। अतएव जीवन का क्रम इस प्रकार का होना चाहिये जिससे कृष्णभावनाभावित कर्म करता हुआ प्राणीमात्र सद्गुरु के माध्यम से भगवान् श्रीकृष्ण के तत्त्व को जान सके। श्रीभगवान् के संकल्प का मर्म उन्हीं की कृपा